ISSN2321-5372

आंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के
युवा अभियान का सशक्त
अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

www.antarbharati.org.in

आंतरभारती ,वसमत म. गांधी स्मृतिदिन
एवं महिला सम्मेलन की झांकी

* वर्ष : ६१ * अंक २ * फरवरी २०२४ * १० रुपये * वार्षिक : १०० रुपये * आजीवन : १००० रुपये

वसमत में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन

संभाजीनगर में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन

लातूर में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन(युवती सम्मेलन)

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

आंतर भारती स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

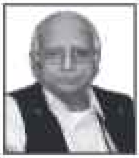

संस्थाध्यक्ष/ पूर्व संपादक
स्व. सदाविजय आर्य

प्रेरक, संवर्द्धक संपादक
स्व. यदुनाथ थत्ते

■ कार्यकारी संपादक
प्राचार्य सुभाष शास्त्री
सुदीक्षा, ९ इंडस्ट्रीयल इस्टेट
होटगी रोड,
सोलापूर - ४१३००३ (महा.)
मो. ९८९०६११४०१
E-mail : subhashvshastri@gmail.com

■ प्रधान संपादक
डॉ. सी. जय शंकर बाबु
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग,
पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेट,
पुदुच्चेरी-६०५०१४
मो. ९४४२०७१४०७
E-mail : editor.antarbharati@gmail.com

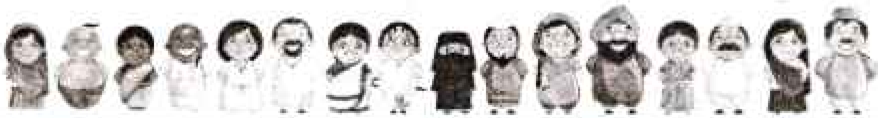

आंतर भारती साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति को सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है।

विश्वस्त - कोषाध्यक्ष
डॉ. उमाकांत चनशेट्टी
मु.पो. बोरामणी ४१३२३८
जि.सोलापूर-४१३००३ (महा)
मो. ९५५२६३७९००

Visit US : antarbharati.org.in

प्रबंध कार्यालय
आन्तर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहा. (महा.) ४१३५२२

संपादक
ज्योतिराव लढके
मार्गदर्शक
■ डॉ. इरेश स्वामी ■ अमर हबीब ■ पांडुरंग नाडकर्णी ■
सहयोगी - मधुश्री आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें।

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji Committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the potentiality, Skills, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक पत्रिका) प्रकाशक अध्यक्ष, आंतर भारती द्वारा मुद्रक मॅजिक पब्लिकेशंस लातूर के लिए मुद्रित कर आंतर भारती संकुल औरादशहाजानी से प्रकाशित की।

आंतर भारती - फरवरी-२०२४

इस अंक में

१) संपादकीय : समतामूलक समाज की प्रतिबद्धता	-	३
२) वेमना का तत्व-चिंतन..	-	५
३) महात्मा बसवेश्वर वचन ...	-	६
४) तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल	-	७
५) बाबा आमटेजी का सेवाव्रती मानस पुत्र.....	-	८
६) सोशल फॉर एक्शन	-	१३
७) श्याम की 'मां' की छवि से परे साने गुरुजी.....	-	१७
८) एक सुंदर प्रेरक लघुकथा ...	-	१९
९) यह वही गांधी बोल रहा है ...	-	२०
१०) दु:खद समाचार	-	२१
११) समाचार	-	२३
१२) समाचार	-	२४

संपादकीय

समतामूलक समाज की प्रतिबद्धता का संदेश लें हम 'अमृत पुत्र' से..

– डॉ. सी. जय शंकर बाबु

संत विनोबा भावे से 'अमृत पुत्र' की संज्ञा से प्रशंसित साने गुरुजी अनन्य राष्ट्र भक्त थे। वर्तमान और अतीत के कई प्रसंगों में, भविष्य की दुनिया के मामले में भी साने गुरुजी के विचार और कर्तृत्व निश्चय ही प्रासंगिक हैं।

उस 'अमृत पुत्र' की १२५वीं जयंती भी मनाते इस दौर में हमें उनके विचार और कार्यों के संबंध में विचार करते हुए आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है कि आंतर भारती का अस्तित्व उनके विचारों के अस्तित्व को, उनके संकल्पित भूमिका को हम कहाँ तक अदा कर रहे हैं।

समतामूलक समाज के पक्षधर साने गुरुजी जब अपने समय में विट्ठल जी के दर्शन करने से जिस वर्ग को वंचित रखा गया, उनके अधिकारों के लिए सत्याग्रह आंदोलन के प्रबल संचालक के रूप में वे भारतीय जनमानस में समता, ममता की भावना को फैलाने सक्षम रहे हैं।

अपने समय में जन–जन की सेवा में लगे रहे गुरुजी हर वर्ग के हित में कार्य करते रहे हैं। उनके विचारों के विश्लेषण से इस बात के कई सबूत हमें मिल जाते हैं। किसानों, वंचितों, हर किसी वर्ग के अधिकारों के लिए कई संदर्भों में अपना योगदान दिया, अपनी आवाज़ उठायी, अपनी लेखनी चलायी, अपना सर्वस्व अर्पित किया। बाल व युवा संस्कारों के लिए हर पल लगे रहें। सबको आत्मनिर्भर बनाने और भारत को स्वतंत्र बनाने के सबके सपनों को साकार बनाने, सबके बीच आत्मीयता पाने के अधिकार के लिए समता के आग्रही बनकर वे सक्रिय योगदान देते रहे हैं। उन्होंने अपने साथी भारतवासियों में सर्थक चेतना जो जगायी थी, वह आज भी प्रासंगिक है। आज किसी भी संदर्भ में किसी भी मामले में हमें किसी समस्या के लिए समाधान ढूँढ़ने में साने गुरुजी के विचार–चिंतन और कार्यों से संदेश और सही मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। भारतवासियों में एकता की भावना के विकास के लिए आंतर भारती की बड़ी भूमिका है।

साने गुरुजी की लेखनी से सर्जित ''बलसागर भारत होवो'' को अंग्रेजों ने जब्त की थी, तो समझिए कि कितनी प्रबल थीं साने गुरूजी की भावनाएँ। वे राष्ट्रहित के कार्यों में भूमिगत भी हुए थे, कारावास की सज़ा भी भोगते रहे हैं।

इस वर्ष हर सप्ताह हमें देश के कोने–कोने में एक न एक जगह छोटा–सा ही कार्यक्रम क्यों न हो किसी रूप में मनाते हुए साने गुरुजी की विचार–चेतना को

जन–जन तक फैलाने की आवश्यकता है, जो समतामूलक समाज के विस्तार का ही कार्य होगा । माँ से प्राप्त ममता को सामाजिक चेतना में तब्दील करनेवाले गुरुजी निश्चय ही सदा प्रासंगिक हैं ।

साने गुरुजी की १२५वीं जयंती के उपलक्ष्य में प्रत्येक राज्य व जिले में कुछ कार्यक्रमों की योजना वहाँ के कार्यकर्ता बनाकर 'आंतर भारती' को सूचित करते रहें। साने गुरुजी भाषाओं के विकास के पक्षधर थे । 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के उपलक्ष्य में इस महीने में साने गुरुजी के भाषा–चिंतन पर हम अवश्य अनुशीलन करेंगे । विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ जन–मन–गण के हितार्थ प्रयोग के पक्षधर साने गुरुजी हमें वैज्ञानिक सोच अपनाने के लिए भी प्रेरित करेंगे । अपने दौर की समस्याओं का समाधान पाने में निश्चय ही साने गुरुजी के विचारों से हमें ऊर्जा और चेतना मिलेगी । इस दिशा में सबकी सक्रियता अपेक्षित है ।

अंतरराष्ट्रीय विकास सप्ताह (६ फरवरी से १२ फरवरी), सुरक्षित इंटरनेट दिवस (८ फरवरी), विश्व दलहन दिवस (१० फरवरी), राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस (१२ फरवरी), विश्व रेडियो दिवस (१३ फरवरी), सेंट वेलेंटाइन दिवस (१४ फरवरी), ताज महोत्सव (१८ फरवरी से २७ फरवरी), अरुणाचल प्रदेश स्थापना दिवस, विश्व सामाजिक न्याय दिवस (२० फरवरी), अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (२१ फरवरी), विश्व चिंतन दिवस, विश्व स्काउट दिवस (२२ फरवरी), राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (२८ फरवरी) आदि पर्वों के अवसर पर अग्रिम शुभकामनाओं सहित...

अंतरराष्ट्रीय विकास सप्ताह (६ फरवरी से १२ फरवरी), सुरक्षित इंटरनेट दिवस (८ फरवरी), विश्व दलहन दिवस (१० फरवरी), राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस (१२ फरवरी), विश्व रेडियो दिवस (१३ फरवरी), संटवेलेंटाइन दिवस(१४ फरवरी), ताज महोत्सव (१८ फरवरी से २७ फरवरी), अरुणाचल प्रदेश स्थापना दिवस, विश्व सामाजिकन्याय दिवस (२० फरवरी), अंतर राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस (२१ फरवरी), विश्व चिंतन दिवस, विश्वस्काउट दिवस (२२ फरवरी), राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (२८ फरवरी) आदि पर्वों के अवसर पर अग्रिम शुभकामनाओं सहित...

सूचना

आन्तर भारती न राजनीति की पत्रिका है न साहित्य की । इसमें मानवता, सामाजिकता संबंधी प्रेरक लेख, कहानी, अनुभव प्रसंग, कविता, कहानी, समाचार भेज सकते हैं । इन्हें डाक द्वारा, मेल द्वारा, व्हाटसप द्वारा, आप भेज सकते हैं । उपयोगी रचनाओं का प्रकाशन होगा । रचनाएँ हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी में भेज सकते हैं ।

वेमना का तत्व-चिंतन

तेलुगु मूल – योगी वेमना

(देवनागरी लिप्यंतरण, हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या – डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

''तनुवु एवरि सोम्मु तनदनि पोषिंप
धनमु एवरि सोम्मु दाचुकोनग
प्राणमेवरि सोम्मु पायकुंडग निल्प
विश्वदाभिराम विनुरवेम ।''

तन किसकी संपदा है अपना मानकर पोषण करने
धन किसकी संपदा है छिपा लेने
प्राण किसकी संपदा जाने से रोकने
विश्वदाभिराम ! सुनरे वेमा !

व्याख्या – इस तन को अपना न होना जानते हुए भी उसका पोषण क्यों करना है? धन अपना न होने का तथ्य जानते हुए भी क्यों छिपा लेना है? इन सवालों के माध्यम से संत वेमना यह स्पष्ट करते हैं कि प्राण जाने से रोकना अपने बस की बात नहीं है, क्यों कि वह भी अपनी संपदा नहीं है। इस ब्रह्मांड में अपना कुछ न होने पर भी अपनी कुछ चीजों को मानकर व्यवहार करने वाले के मस्तिष्क में विवेक पैदा करने की कोशिश संत वेमना करते हुए ब्रह्म तत्व की महानता को साबित करते हैं।

महात्मा बसवेश्वर वचन

।। मूळ कन्नड वचन ।।

पंडितनागलि मूर्खनागलि संचित कर्म उंडल्लदे
बिडदु प्रारब्ध कर्म भोगिसलल्लदे होगदेंदु
तानाव लोक दोळिद्दरू बिडदु कर्म फलगूडि
कूडल संगम देवरिगे आत्मनैवेद्यव
माडिदवने धन्य.

हिंदी काव्यानुवाद

पंडित रहे मूर्ख रहे उनके कर्म
उनका पीछा नहीं छोडते ।
ऐसा वेद कहते हैं ।
कर्म–फल भोग छूटते नहीं
कूडल संगम देव, आत्म–नैवेद्य
अर्पण करनेवाले धन्य है.

भाष्य

श्री मद्भगवद्गीता का सिध्दान्त और बसवण्णा का कायक सिध्दान्त वेद वेदांत अर्थात् श्रुति का कहना यही है कि हम जो करते हैं वही हम भोगते हैं । कर्म भोग आप कहीं भी रहें, किसी भी लोक में रहे, गाय के बछडे जैसे गाय के पीछे उसीका पीछा करते है । वैसे ही व्यक्ति के द्वारा किये गए कर्मों के फल उसीको भोगने पडते हैं, चाहे वह किसी भी लोक में रहे उसको उसके किये कर्मों के फल भोगने पडते हैं । उससे उसे मुक्ति नहीं हैं ।

डॉ इरेश सदाशिव स्वामी
विद्या, १२ ब्रह्मचैतन्य नगर,
विजयपुर रस्ता, सोलापूर–४१३००४
भ्रमण : ९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी तिरुक्कुरल

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर

(देवनागरी लिप्यंतरण, एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु)

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
तुरवरवियल् (संन्यास-धर्म)
अध्याय २७. तवम (तप)
वेण्डिय वेण्डियाङ् गेयदलाल् चेय्दवम्
ईण्डु मुयलप् पडुम । (कुरल - २६५)

तप सकल
सिद्धियों का मूल
तप कीजिए ।

भावार्थ – तप से सभी वांछित परिणाम की प्राप्ति होती है । इसलिए इस जगत में तप करना उचित है । तिरुवल्लुवर मानते हैं कि लोक हित चाहने वाले तपस्वी तमाम सिद्धियों की प्राप्ति तपस्या के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं, अतः मनुष्य को तप करना चाहिए ।

तवञ्चेय्वार तङकरुमम् शेय्वार्.मट्रल्लार
अवम्शेय्वार् आशैयुट् पट्टु । (कुरल - २६६)

तप की स्फूर्ति
कर्त्तव्यपूर्ति, कामी
ऊर्जा का लोभी ।

भावार्थ – तपस्साधक अपने कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए तत्पर होते हैं और उसमें सफल हो पाते हैं अतः सार्थक योगदान कर पाते हैं । ऐसी साधना को न अपनाने वाले कामवासनाओं में लिप्त होकर कर्मयज्ञ से वंचित रह जाते हैं । तिरुवल्लुवर का कहना है कि तपस्या करने वाले कर्त्तव्य की पूर्ति की ऊर्जा हासिल कर कर्त्तव्य की पूर्ति करने के लिए तत्पर होते हैं । जो तपस्या करने से दूर रहते हैं, वे कामवासनाओं में सबकुछ खो जाते हैं, अतः सार्थक कार्य नहीं कर पाते हैं ।

बाबा आमटेजी का सेवाव्रती मानस पुत्र

– संदीप काळे

मैं वर्षभर में कम से कम बारह से पन्द्रह हजार रोगियों की सेवा करता हूँ उन रोगियों से पैसे कैसे ले ? उनके पास पैसे नहीं होते अब उन रोगियों की मुझे चिन्ता होने लगी।। क्योंकि मनुष्य को बचाने के लिए जो महत्वपूर्ण बातें होती है वे हमारे पास नहीं है । वह साधन–सामग्री लेने के लिए जितना पैसा चाहिए हम प्राप्त नहीं कर सकते इसकी ही मुझे चिंता है ।

मैं निश्चयअनुसार नांदेड से कु डेढसौ किलोमीटर का अन्तर तय करके किनवट पहुंचा । शायद दस वर्षों के बाद मैं किनवट जा रहा था । बाबा आमटे के भारत जोडो यात्रा के द्वारा अशोक यहाँ के आदिवासी भाग में काम करते थे इसलिए यहाँ के आदिवासी भाग में काम करते थे इसलिए १९९३ में दवाखाना शुरू किया । उस भाग में उसकी देवदूत के रूम में कीर्ति फैल गई, लाखों आदिवासी लोग उसे आदर व मान देने लगे बिलकुल भी विकसित न हुए शत प्रतिशत आदिवासी भाग में इतना बड़ा काम करना आसान न था ।

मैं किनवट पहुंचा । पन्द्रह वर्ष पूर्व मैंने जो दवाखाना जैसा देखा था वैसा ही था। बैलगाडी से रिक्शा से आए अनेक रोगियों की जांच करते समय डॉ. अशोक बेलखोडे सर (९८२२३१२२१४) दंग रह गए । मेरे आने की सूचना मिलने के बाद भी तीन घंटों के बाद मुझसे मिलने आ सके । दस मिनट मुझसे बात की और वापिस दवाखाने में गए । कर्मठ (हाडाचा) कार्यकर्ता और होशियार डॉक्टर अशोक बेलखोडे की इतनी ही पहिचान न थी परन्तु बाबा आमटे के सेवाव्रती मानसपुत्र ऐसी भी डॉ. बेलखोडे की पहचान है । अपना सब काम समेट कर डॉक्टर मेरे पास आए । '' कैसे पहुंचे ? आते समय कष्ट तो नहीं हुआ ? ऐसा एकदम सगे बच्चे जैसा मेरी पूछताछ करने लगे । गप्पे मारी और रात का भोजन भी हो गया । गप्पों का दूसरा दौर अब प्रारम्भ हुआ था । शायद दस बजे होंगे । अचानक नीचे काम करनेवाले दो कम्पाउंडर भागते हुए ऊपर आए । उन्होंने डॉक्टर से कहा कि '' एक महिला आई है । उसे बहुत कष्ट हो रहा है । आप नीचे चलिए ! डॉक्टर वैसे तयार ही थे । एकदम बाबा आमटे जैसी पोशाक... सफेद शर्ट और घुटनों तक की लंब्बी चड्डी तथा सोच थी । जल्दी से उठकर डॉक्टर नीचे जाने उठे, मैं भी डॉक्टर के साथ नीचे गया । देखा तो क्या, एक बीस वर्ष की महिला, उसके कंधे पर एक वर्ष का बच्चा था । पेट में पल रहे बच्चे की तरफ मेरा ध्यान गया । डॉक्टर ने उस महिला से शान्ति से पूछा '' क्या हुआ ? उसने कहा, मेरा पेट पिछले महीनेभर से दुख रहा है । घास फूस खाई, महाराज को दिखाया परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ । उसका पति बीच में ही बोला, ''

साहब सुबह कष्ट से बहुत तडप रही थी इसलिए वहाँ से निकले ''डॉक्टर क्रोध से उस व्यक्ति से कहने लगे '' अरे फिर जब दर्द शुरू हुआ, तभी लाना था ना ....। वह कुछ न बोलते हुए शान्त बैठा । डॉक्टर उस महिला को अन्दर ले गए । उसके पास के बच्चे को उसने पति के पास दिया । वह बेचारा एक कोने में जाकर बैठ गया। मैं उसके पास गया, उसे पीने के लिए पानी दिया और मैंने उस व्यक्ति से पूछा '' कहाँ से आए हो तुम?'' उसने कहा'', मांजरीमाथा। मैंने कहा'' अच्छा''

मैंने फिर पूछा '' कैसे आए....'' उसने कहा कुछ दूर पैदल, कुछ दूर बैलगाडी से और शेष राह हमने गिरते-पडते पार की...

यह तीन प्रकार की यात्रा मुझे कुछ समझ में ही नहीं आया, साथ खडे कम्पाउंडर ने मुझे बताया, दवाखाने के आस पास के अनेक गांवों में पगडंडी ही है । जिससे दवाखाने तक आने में लोगों को बहुत समय लग जाता है । मुझे बहुत हैरानी हुई, हम जिस राज्य में रहते है उस राज्य में अभी भी अनेक गांवो में पगडंडी ही है, कच्चा रास्ता भी नहीं, इस बात से मुझे धक्का लगा। डॉक्टर बाहर आये और उन्होंने उस महिला के पति से कहा, मुझे तुरन्त ऑपरेशन करना पडेगा '' उन्होंने अपने कुछ सहायक डॉक्टरों को फोन किया और जल्दी से बुला लिया शस्त्रक्रिया करने के बाद उस महिला के पेट से अतिरिक्त जो मांस का लोथडा, गर्भ को धक्का न देते हुए बाहर निकाला । डॉक्टर एकदम अनुभवी सर्जन है । उस शस्त्रक्रिया के कुछ फोटो तथा व्हीडीओ डॉक्टर ने खास मुझे दिखाने के लिए निकाले थे । उस छोटी सी ट्रे में रखा हुआ वह लोथडा देखकर मेरा दिल दहल गया । तीन घंटों के बाद डाक्टर उस महिला के रिश्तेदारों की व्यवस्था कर सके मेरी । तरफ देखते ही बोले, अरे अभी जागे हो क्या तुम? मैंने कहा हाँ आपको ऐसा कभी भी पेशंट के लिए जाना पडता है क्या ? डॉक्टर ने कहा यह बहुत बडी जगह है । जंगल में पहाडों के बीच में रहनेवाला यह समुदाय है । हमारा दवाखाना चौबीस घंटे खुला रहता हैं, इसलिए रोगी रातभर भी आते रहते है । इसके अतिरिक्त कष्टवाली प्रसूति तो पूछो ही मत । हमारे पास बहुत सुविधा नहीं है फिर भी मनुष्य को बचाना तो है ही तथा ठीक तो करना पडेगा । यही भावना मन में लेकर अपना काम कर रहे हैं । मैंने कहा, '' सर आप यह सब कैसे कर लेते हो ? आपके पास आने वाले अधिकतर रोगी पचास रूपये भी फीस दे नहीं सकते ऐसे हैं । उनका ऑपरेशन रहने के निवास की व्यवस्था, उनका भोजन पानी कैसे होता है ?

डॉक्टर ने कहा, कुछ नहीं, जैसे १९९३ से चला आ रहा है वैसा है । और तेरे जैसे चार मित्र यथासंभव सहायता करते हैं । और उसीसे यह सब चलता है । बाबा आमटे की दी हुई सीख आंखों के सामने दिखी । एक संस्था चलाने के लिए क्या चाहिए , इच्छाशक्ति तथा ईमानदारी । एक एक विषय समझाते हुए डॉक्टर बोल रहे थे और मैं

हैरान होकर सुन रहा था । इस भाग में आज भी किनवट के आसपास ५०,६० किलोमीटर तक कोई भी डॉक्टर हमें सरकारी काम में अच्छी सेवा देनी चाहिए, इस मानसिक तैयारी में नहीं होता । क्योंकि आसपास सभी अशिक्षित लोग होते हैं । अच्छी शाला, महाविद्यालय नहीं है, यातायात की सुविधा नहीं, ऐसी सारी परिस्थितियों में हम कैसे रहे, यह समस्या इन पढेलिखे कई डॉक्टरों तथा अधिकारियों को होती है ।

मैंने बीच में ही कहा, डॉक्टर आपने इतनी बडी इमारत खडी की है यह सच है परन्तु आपके बाद इसे कौन चलाएगा ? हंसकर एकदम शान्ति से डॉक्टर बोले, मेरे साथ वाले अनेक बचे, जिन्होंने यहाँ बहुत अच्छे काम होते हुए देखे हैं, अनुभव किया है, मेरे काम में सहायता की थी, वे अब मेडिकल ऑफीसर बनकर मेरे साथ काम करने आ रहे है । इसलिए मेरे बाद क्या होगा इसकी चिन्ता दूर हो गई है । उत्साह में आकर डॉक्टर ने कहा '' एक सचाई तुम्हें बताता हूँ, मेरे पास एक नर्स काम करती है,उस नर्स को एक कन्या पैदा हुई, वह यहीं पर हमारे घर पर पली–बढी है मेरे कंधों पर बडी हुई है । यहाँ के सारे वातावरण ने उसमें डॉक्टर होने के स्वप्न बुन दिए है । हम प्यार से उसे पिलू पिलू कहते । अब वही पिलू यानी वन्दना, लातूर के राजश्री कॉलेज में पढती है । वह कहती है मैं डॉक्टर बनकर आपकी परंपरा आगे चलाऊंगी । उसे दसवी में ९२ प्रतिशत अंक मिले है । ऐसे अनेक लोग है, जिन्होंने मेरा काम देखा हैं और यहाँ पर इन आदिवासियों के लिए, दीन–असहाय लोगों के लिए हमें काम करना है, ऐसा निश्चय कर अपना करिअर शुरू किया है । थोडे चिन्तित होकर डॉक्टर बोले '' मैं वर्षभर में कम से कम बारह पन्द्रह हजार रोगियों की सेवा करता हूँ उन रोगियों से पैसे कैसे लें ? उनके पास पैसे नहीं होते अब उन रोगियों की मुझे चिन्ता होने लगी, क्योंकि मनुष्य बचाने के लिए जो महत्वपूर्ण बातें होती है वे हमारे पास नहीं है । वह साधनसामग्री लेने के लिए जितना पैसा चाहिए–हम प्राप्त नहीं कर सकते ।

मैंने बीच में ही कहा'' क्या क्या सामग्री आपको लगती है ? डॉक्टर प्रश्वास छोडते हुए बोले, '' वैसे लिस्ट (यादी) लम्बी है रे बाबा । एक्सरे मशीन, सोनोग्राफी मशीन, एन आय.सी.यू व्हेंटिलेटर, आयसीयू, इस तरह के कई । मैंने कहा, आपने कुछ दानदाता ढूंढे नहीं क्या ? उन्होंने कहा ढूंढे.... पर आगे ज्यादा कुछ नहीं हुआ । दवाखाने का निर्माण कार्य कई वर्षों से पूरा नहीं हो पा रहा, मुझे और मेरे सारे सहकारियों को प्रातः सात बजे से रात नौं बजे तक कही भी हिलने जाने नहीं आता यहाँ इतने पेशंट होते हैं । मैं जो काम करता हूँ वह सबको पता है, फिर भी हम आर्थिक रूप से पूरे स्वतंत्र हो नहीं पा रहे । ऐसा ध्यानपूर्वक डॉक्टर मुझे कह रहे थे ।

मैं सोच रहा था जिन्होंने स्वयं लोगों की सेवा करने के लिए इस जलते हुए कुंड में छलांग मारी है उनके साथ नए जुडने

वालों की संख्या गिनी चुनी ही होगी । उन्हें मदद करने के लिए लोग क्यों आगे आते नहीं होंगे ? हर साल डॉक्टर कम से कम दो हजार लोगों की जान बचाते होंगे । कम से कम दस हजार लोगों को पूर्ण स्वस्थ करके घर भेजते होंगे । इन गरीब लोगों को अपने दवाखाने तक आना मुश्किल होता है, ऐसा ध्यान में आने पर डॉक्टर ने माहूर यवतमाळ, उमरखेडा और उधर तेंलगाना की सीमा आदि सब भागों मे फिरता दवाखाना शुरू करना.... डॉक्टर कुछ विचार कर रहे थे ।

मैंने डॉक्टर को ऊंची आवाज में कहा '' इस भाग में शिक्षा का प्रमाण वैसे कम है ना.....

डॉक्टर ने कहा, यह तो एकदम सच सच है । खूब कमी है, मैंने यही विषय लेकर उच्च शिक्षण की सुविधा इस भाग में हो, इस के लिए शासनदरबार में इस्लामपुर को अपनी इस संस्था को कॉलेज देने की मांग रखी है परन्तु वहाँ मुझे सरकार तथा पक्ष बीच में आए । बहुत दिन सरकार के विरोध में न्यायोचित लडाई लडने के बाद अपना कॉलेज मिला है, आज गरीबों के दीन दलितो के बचे इस्लामपुर के साने गुरूजी नामक अपने महाविद्यालय में उच्च शिक्षा ले रहे हैं ।

मुझे डॉक्टर के प्रति श्रध्दा बढी, तत्वों तथा मूल्यों पर चलनेवाले व्यक्ति को कई बार यश कैसे मिलता है, इसका डॉक्टर के कॉलेज का प्रकरण उत्तम उदाहरण था । वह सारा किस्सा मुझे डॉक्टर ने सुनाया । डॉक्टर के पास इतने विषय थे कि सुनने के लिए एक रात कम पड जाती । बातों की झडी में रात के दो कब बज गए, पता ही नहीं चला फिर गुडनाइट अब सोओ ऐसा कहते हुए डॉक्टर मेरे साथ में आगे चटाई बिछा कर सो गए । आँखे बंद करते ही कब नींद लग गई पता ही नहीं चला । प्रातः ठंडी हवा और पक्षियों का चहचहाना ! मेरी सात बजे नींद खुली, देखता हूं कि मेरे ऊपर ओढना डाला हुआ है, रात को तो मैनें ओढा नहीं था। मेरे ध्यान में आ गया कि ओढना उढाने का काम डॉक्टर ने किया था । वहाँ का सारा वातावरण देखकर एकदम मुझे बाबा आमटे के आनन्दन में होने जैसा लगा । आनन्दवन जैसा ही वातावरण था । मैं उठकर नीचे देखता हूँ तो क्या ? रोगियों का आनाजाना शुरू हो गया था । बाहर एक कुर्सी डालकर डॉक्टर ने अपनी ओपीडी शुरू कर दी थी । मैं आनन्दवन में कई बार डॉक्टर के साथ था । केवल वातावरण ही नहीं अपितु साने गुरूजी रूग्णालय में चलने वाली सेवा देखकर दोनों जगह के मूल्यों में, संस्कारों में समानता लग रही थी, बाबा के कहेनुसार '' हाथ लगें निर्माण में, नहीं मांगने, नहीं मारने का सच्चे अर्थो में प्रत्यक्ष अनुभव यहाँ हो रहा था । एक बडे सर्जन, समाजसेवक, अनेकों के पालक इतनी ही पहचान नहीं थी डॉक्टर की अपितु बाबा आमटे के मानसपुत्र जैसी पहिचान सारे सेवाभावी वातावरण में है । किनवट में सेवाव्रती रूप में आनन्दवन जैसे पिछले कितने ही वर्षो से निरन्तर काम कर रहे हैं. अब डॉक्टर बुढापे की तरफ झुक रहे हैं, फिर भी उनका काम युवा (२५ वर्षों

वाले) जैसा आज भी कायम है।

उस दवाखाने के लिए, उस भाग के पीडितों के लिए और डॉक्टरों के लिए क्या कर सकते हैं, इसका विचार मन में रखकर मैं निकलने की तैयारी में लग गया। सच पूछे तो वहाँ से मेरे पैर बाहर नहीं निकल रहे थे। डॉक्टर ने कहा ' अरे आए हैं तो रहो दो दिन, क्यों जल्दबाजी करते हो ? मैं शान्त रहा, मैंने कहा '' फिर आऊंगा'' ऐसा कहते हुए डॉक्टर और साने गुरूजी रुग्णालय के सारे परिवार से विदाई ली। शहर से थोडा आगे जाने पर, मुझे कई महिलाएं अपने सिर पर लकडियों के गठ्ठे उठाए हुए दिखी। उन महिलाओं के शरीर पर पूरे वस्त्र नहीं थे। उन महिलाओं की वेशभूषा में उनके कुपोषित शरीर में मुझे अपने राज्य का दारिद्र्य दिख रहा था। यह दरिद्रता दूर करना, राज्य निर्माण हुआ तबसे २४ मुख्यमंत्री और उनकी सरकार को कभी संभव नहीं हुआ ? और बाबा आमटे, डॉ. अशोक बेलखोडे जैसे व्यक्ति अपनी सेवावृत्ती से कुछ तो करने आगे आ रहे है , उन्हें न कोई समाज स्थान देता है, न कोई सरकार... यह ऐसा क्यों ? ऐसा मन में प्रश्न आता है और उत्तर नहीं मिलता।

लेखक – मो. ९८९००९८८६८

हिन्दी भाषान्तर : मधुश्री आर्य

मो. ६३७७२३७१६०

लातूर में महात्मा गांधी स्मृति एवं महिला प्रबोधन कार्यक्रम
''अवसर के अभाव मे महिला क्षमताविकास नहीं- अमर हबीब''

लातूर : में संपन्न म. गांधी स्मृतिदिन एवं महिला प्रबोधन कार्यक्रम आयक्यूएसी युवती मंच, महिला तक्रार निवारण समिति एवं आंतर भारती शाखा की ओर से आयोजित थी। प्रमुख अतिथि के रूप में आंतर भारती राष्ट्रीय के कार्याध्यक्ष अमर हबीब ने कहा, प्रकृतितः महिलाएं पुरुषों से अलग होती हैं, अष्टाध्यायी, अष्टावधानी होने से एक समय में वे कई काम कर लेती है। प्रथा परंपरा रूढियों की वजह से भारतीय परम्परा में महिलाओं को गौण स्थान दिया गया।

आयोजित महिला कार्यशाला में स्त्री अंधश्रध्दा , स्त्री पुरूष समानता, स्त्री सबलीकर इ. विषयोंपर अरूणा दिवेगावकर , स्मृति जगताप डॉ. पन्हाळे–जाधव आदि मान्यवरों के मार्गदर्शन पर वक्तव्य हुए। स्वागतपर वक्तव्य डॉ. राजकुमार लखादिवे ने, प्रास्ताविक प्रा. वनिता पाटील ने, सूत्र संचालन डॉ. गीता शर्मा ने तथा धन्यवाद भाषण प्रा. अलका चिकुर्डेने किया।

इस समारोह में लातूर आंतर भारती के अध्यक्ष डॉ. बी.आर पाटील कार्यवाह दीपरत्न निर्लगेकर, सुपर्ण जगताप, डॉ. शीतल येरूळे इ. मान्यवर एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थिनी बडी संख्या में उपस्थित थीं।

सोशल फॉर एक्शन

– डॉ. अशोक बेलखोडे, किनवट

सकाळ सोशल फाउंडेशन के अन्तर्गत चलने वाले सामाजिक उपक्रमों के लिए 'सोशल फॉर ॲक्शन' यह ऑनलाइन वेबसाईट के स्वरूप में नया प्लेटफॉर्म शुरू किया गया है । इस वेबसाईट को बहुत स्वयंस्फूर्त प्रत्युत्तर मिला । उसीमें से ही स्वयंसेवी संस्था तथा दानदाताओं के एकत्र लाने के लिए सोशल फॉर एक्शन क्राउड फडिंग के लिए नए डिजिटल प्लेटफॉम की अवधारणा का जन्म हुआ । इस उपक्रम में प्रति सप्ताह एक स्वयंसेवी संस्था की जानकारी दी जाती है । आज के भाग में 'भारत जोडो युवा अकादमी' इस संस्था की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

''भारत जोडो युवा अकादमी'' इस स्वयंसेवी संस्था के अन्तर्गत नांदेड जिले के किनवट जैसे आदिवासी बंजाराबहुल भागों में आरोग्यसेवा पहुंचाने वाले साने गुरुजी रुग्णालय है । नांदेड जिले में किनवट बडा तालुका है । तालुके को घने जंगल प्राप्त हुए है । महाराष्ट्र के कई दुर्गम भागों में आज की आरोग्यसेवा तथा सुविधाओं की कमी अत्यधिक महसूस होती है । किनवट जैसे भाग में पचीस वर्ष पहले आरोग्य की समस्या विकट थी । उस समय महान समाजसेवक बाबा आमटे की प्रेरणा से डॉ. बेलखोडे ने १९९५ में साने गुरुजी रुग्णालय खडा किया।

'भारत जोडो युवा अकादमी' यह संस्था पचीस वर्ष पहले '' भारत जोडो सायकल अभियान तथा 'सोमनाथ श्रमसंस्कार छावनी' में सहभागी होने वाले युवा तथा युवतियों को एकत्र करके स्थापित की गई है । डॉ. अशोक बेलखोडे इस संस्था के प्रमुख है । वे मूलतः नागपुर के, औरंगाबाद वैद्यकीय महाविद्यालय से एम.ए जनरल सर्जरी पदवी प्राप्त की है, डॉ. अशोक बेलखोडे १९८५ तथा १९८९ में कन्याकुमारी से काश्मीर तथा इटानगर से ओखा, बाबा आमटे के राष्ट्रीय एकात्मता के लिए '' भारत जोडो'' सायकिल यात्रा में सहभागी हुए थे । बाबा आमटे उनके प्रेरणा–स्थान थे । उन्हींके मार्गदर्शन के कारण किनवट जैसे आदिवासी भाग के लिए काम करने का डॉ. अशोक बेलखोडे ने निश्चय किया ।

साने गुरुजी रुग्णालय के कारण किनवट के आसपास के चार सौ गांवों के मरीजों के एकदम प्राथमिक स्वरूप का परन्तु आधुनिक स्वरूप का उपचार मिलने लगा । एकदम प्रारम्भ से ही पॅथॉलॉजी लॅब, एक्सरे, साथ ही ऑपरेशन की सुविधा तथा सब प्रकार की तात्कालिक उपचार करनेवाले पूरे समय कार्यरत रुग्णालय मिले । इस परिसर में पहला अशासकीय रुग्णालय तथा डॉ. बेलखोडे ये पूरासमय

काम करने वाले पहले सर्जन हैं तथा वैसे देखा जाय तो अब भी अकेले ही है।

सानेे गुरुजी रुग्णालय में अब पचीस बेड (बिस्तर) हैं और रुग्णालय के पास दो रुग्णावाहिका (उनमें से एक कार्डियाक) एक डायलिसिस युनिट है। रक्त के लिए केंद्र है। स्वतंत्र फिजिओथेरेपी, डेंटल युनिट है। डॉ. अशोक बेलखोडे के मार्गदर्शन के अन्तर्गत रुग्णालय में बीमारों की ठीक ठीक जांच उनके विविध परीक्षण, आवश्यकतानुसार शस्त्रक्रिया आदि बातें किनवट भाग में पहलीबार प्रारम्भ हुई, एक फिरता दवाखाना भी है, जो प्रतिदिन चार-पांच दुर्गम गांवो में आरोग्यसेवा वहाँ जाकर देता है।

आजतक महाराष्ट्र राज्य के मराठवाडा विदर्भ भाग के रुग्णों-बीमारों के साथ साथ तेलगाना राज्य के मिलाकर तकरीबन चारसौ गांवों में लाखों लोगो ने लाभ प्राप्त किया है। इनमें से पचास प्रतिशत आदिवासी लोग हैं। हर साल साधारण रूप से दस हजार बीमार रुग्णालय का लाभ प्राप्त करते हैं। रुग्णालय में आजतक तकरीबन सातहजार सफल शस्त्रक्रियाएं की गई हैं। इनमें तत्काल (इमर्जेन्सी) उपचार किए हुए बीमारों की संख्या बहुत बडी है इस आरोग्य सेवा के कारण कइयों के प्राण बचाए गए। इसलिए साने गुरुजी रुग्णालय यह इस परिसर के लोगों के लिए जीवनदायी केंन्द्र बन गया है। रुग्णालय की तरफ से परिवार नियोजन कार्यक्रम किशोर कन्याओं के प्रशिक्षण शिवीर, गर्भवती माता तथा कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिवीर आयोजित करके मार्गदर्शन तथा जनजागृति की जाती है।

डॉ. बेलखोडे का कुटुम्ब कल्याण कार्यक्रम में बहुत बडा योगदान है। उन्होंने अबतक सात-आठ जिलों में परिवार नियोजन शस्त्रक्रिया की है। यह संख्या अब नब्बेहजार से अधिक हो गई है। उसके लिए उन्होंने तकरीबन दो लाख किलोमीटर यात्रा भी की है।

रात-बेरात आदिवासी, गरीब मरीज तथा प्रसव के लिए मीलों यात्रा करके, कईबार पैदाल चलकर उपचार के लिए साने गुरुजी रुग्णालय में आते हैं। ऐसे समय में डॉ. अशोक बेलखोडे सबसे पहले बीमारों की सेवा के लिए उपस्थित रहते हैं। किनवट में आज भी कचे रस्ते है। यातायात तथा दैनंदिन व्यवहार के साधन पर्याप्त पहुंचे नहीं थे। सारे रुग्णालयों में से साने गुरुजी रुग्णालय में एकदम योग्य दर में उपचार किया जाता है। किनवट में कार्य प्रारम्भ करते समय डॉ. बेलखोडे ने बाबा आमटे को, कितनी भी दिक्कते आने पर भी किनवट छोडूंगा नहीं, ऐसा वचन दिया था। उसी श्रध्दा से वे अन्ततक इस भाग के आदिवासी तथा गरीब बीमारों की सेवा करते रहेंगे। बाबा आमटे से प्राप्त रुग्णसेवा की विरासत डॉ. अशोक बेलखोडे साने गुरुजी रुग्णालय के माध्यम से आगे चला रहे हैं।

साने गुरुजी रुग्णालय तथा अन्य

आरोग्य प्रकल्प ये 'भारत जोडो युवा अकादमी' इस संस्था के कार्यों का प्रमुख भाग होने पर भी साथ में इस परिसर में विज्ञान (तालुका विज्ञान केन्द्र, मनिप, अनिंस) शिक्षण (साने गुरुजी इंग्लिश स्कूल दो जगहों पर साने गुरुजी चित्रकला महाविद्यालय, साने गुरुजी वरिष्ठ कला महाविद्यालय इस्तापुर : रुग्ण सहायिका प्रशिक्षण) महिला, छोटे बच्चों के (राष्ट्र सेवा दल के शिवीर, कथामाला) युवा विकास (राष्ट्रीय एकात्मता शिवीर, रक्तादान शिवीर, संवाद तथा प्रबोधन शिवीर, सांस्कृतिक व्याख्यानमाला, लोककला, लोकनृत्य, संगीत महोत्सव इत्यादि) जलसंधारण, अकाल तथा आपत्ती निवारण आदि क्षेत्रों में सराहनीय अद्वितीय कार्य करके अपनी विशेष छाप छोडी है।

भारत जोडो युवा अकदमी संस्था ने इस परिसर के पिछले पचीस वर्षों का अनुभव लेते हुए इस परिसर में जो आरोग्य विषय की कमियां तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर साने गुरुजी इमर्जन्सी व मल्टिस्पेशालिटी हॉस्पिटल यह महत्वाकांक्षी प्रक्लप हाथ में लिया है। एक तरफ वैद्यकीय तंत्रज्ञान आकाश में खोज कर रहा है परन्तु यह सारा तंत्रज्ञान शहर में ही अटक कर पडा है। उसका लाभ किनवट परिसर के गरीब, गरजमंद तथा वंचित जनता को मिलना चाहिए इस उद्देश्य से इस प्रकल्प की स्थापना करने की डॉ. अशोक बेलखोडे तथा उनकी संस्था के तथा परिवार के सभी सहकारियों ने निश्चय किया है इस सौ बिस्तर के प्रकल्प का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। तथा इसका उद्घाटन डॉ. प्रकाश आमटे के हाथों हुआ है।

इस प्रकल्प के लिए शासन ने एम.आय.डी.सी किनवट में पांच एकड जमीन दी है तथा उसपर काम चल रहा है। पहले की तरह इस प्रकल्प का लाभ आसपास के चार सौ गांवों के तीन लाख जनसंख्या को होगा तथा इस प्रकल्प के कारण उनके नांदेड १५० कि.मी., यवतमाळ १४० कि.मो. नागपुर व हैद्राबाद ३०० कि.मी. आदि जगहों पर बारबार जाना का कम हो जाएगा तथा जीवनयापन सुखकर होने में मदद मिलेगी।

इस नए रुग्णालय में आधुनिक तथा अत्यन्त आकस्मिक रूप से की आरोग्य सुविधा उदाहरणार्थ आय.सी.यू. एन.आय.सी.यू. हड्डियों तथा पेट के बडे ऑपरेशन 'कर्करोग पर उपचार' दुर्बीन द्वारा जांच तथा उपचार इत्यादि सुविधाएं की जाएगी तथा महिला, बच्चे ज्येष्ठ इत्यादि को सुविधा दी जाऐगी तथा महिला, बच्चे ज्येष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सुविधाएं होगी।

विशेष करके कर्करोगियों के लिए आवश्यक तथा उनका अन्त दुखद न हो इसका प्रयत्न करने वाला पॅलीएटीव केअर युनिट की स्थापना की जाने वाली है। इस दस बेडस् (बिस्तरों) वालें पॅलिएटीव केअर युनिट के लिए लगने वाले भौतिक साधन, यंत्रसामग्री तथा वैद्यकीय साहित्य पर होने

वाला खर्चा अधिक है । उसके लिए निधि जमा करने का कार्य शुरु है ।

सानें गुरूजी रुग्णालय ये समाज के दानवीर व्यक्तियों के दान से खडा है । उसके लिए आवश्यकता है सामूहिक सहायता की ।

'' भारत जोडो'' युवा अकादमी इस स्वयंसेवी संस्था को किसी भी प्रकार का शासकीय अनुदान नहीं है । समाज के दानवीर व्यक्ति तथा कुछ संस्थाओं की मदद से संस्था चलती है । बीमारों की आरोग्य–जांच तथा औषध उपचार तथा शस्त्रक्रिया का बडा खर्च है । संस्था को सामूहिक आर्थिक मदद की खूब आवश्यकता है । सकाळ माध्यम समूह के सोशल फॉर एक्शन, इस डिजिटल क्राउड फंडिग के प्लेटफार्म पर '' भारत जोडो युवा अकादमी के उपक्रमों की जानकारी मिलेगी–समाज के दानवीर व्यक्ति, सूचना–तंत्रज्ञान कंपनियाँ, सी.एस.आर कम्पनियां तथा परदेसी – भारतीय नागरिक इस वेबसाइट को जाकर '' भारत जोडो'' युवा अकादमी इस संस्था के अन्तर्गत चलने वाले साने गुरुजी रुग्णालय की जानकारी लेकर डोनेट नाऊ इस बटन पर क्लिक करके सीधे वेबसाइट द्वारा दान दे सकते हैं । इस क्राउड फंडिगंद्वारा दान देने वाले प्रत्येक दानदाता के दान की रसीद तथा ८० जी यह प्राप्तिकर में ५० प्रतिशत छूट का प्रमाणपत्र मिलेगा ।

साने गुरुजी रुग्णालय, किनवट
जिलाः नांदेड, महाराष्ट्र

हिन्दी भाषान्तर : श्रधुश्री आर्य
मो. ६३७७२३७१६०

कथामाला- आंतर भारती

साने गुरुजी की शतकोत्तर रजत जयंती के अवसर पर

अगर हर जगह मानवता का माहौल आ जाए तो यहां समाजवाद का विकास आसान हो जाएगा। इसलिए सेवादल की ओर मेरा आकर्षण है। सेवादल के बच्चे सभी भंग, मुस्लिम, हरिजनों को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं। हम भी उनके पास जाते हैं । ये सुनकर मुझे खुशी होती है। मुझे लगता है कि सेवादल नवराष्ट्र का निर्माण कर रहा है। उस छोटे से कमरे में जहां भारत के सभी बच्चे एक साथ भोजन कर रहे हैं, प्रेम से बातें कर रहे हैं, वहां भारत माता विराजमान हैं। ईश्वर है। मेरा जीवन समाजवाद, सेवादल के लिए तरसता है। अपना विद्यालय भारतीय एकता का प्रतीक बने। भारत के सभी प्रांतों से वहां शिक्षक हों। कानी उस क्षेत्र की भाषा सुननेको मिले। आप उस क्षेत्र की सारी संस्कृति, कला और संगीत को जाने–समझे। जब से मैंने यह पत्र लिखा है, मेरा एक सपना है कि एक दिन एक ऐसी संस्था की स्थापना होगी जो भारत की एकता की शिक्षा देगी।

आज देश को एक ऐसे संगठन की जरूरत है जो हम सबको सीख दे। यह संगठन है आंतर भारती, सेवा दल। आप सभी हिंदू–मुस्लिम, ब्राह्मण–गैर–ब्राह्मण एक साथ आएं। छूत हो न , अछूत हो, साथ उठो–बैठो, खाओ, पियो, खेलो, सीखो, काम करो, आओ सब हम सब भारत माता संतान की ।

बालसागर भारत होवो,
विश्वात में शोभुनी राहो,
समतेचा ध्वज ऊंच धरा रे,
ऐसा गुरुजी कहते थ।

प्रेषक– दीनानाथ रत्नापारखे, सोलापुर

साने गुरूजी के शतकोत्तर रजतमहोत्सव वर्ष के निमित्त से

श्याम की 'मां' की छवि से परे साने गुरूजी

-अंजली कुलकर्णी, पुणे

(गत अंक से आगे)

स्वतंत्रता संग्राम में कूदें।

इन सबकी पृष्ठभूमि में उनका गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होना बिल्कुल स्वाभाविक था। उनका मानना था कि सामाजिक समानता और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष एक साथ लड़ा जाना चाहिए, जो गांधीजी के रुख के अनुकूल था। उन्होंने १९३० में अपनी नौकरी से इस उत्कट इच्छा से त्यागपत्र दे दिया कि इन सभी संघर्षों में उनकी भी हिस्सेदारी हो और १९३० के सविनय अवज्ञा आंदोलन से उन्होंने खुद को कांग्रेस के विभिन्न संघर्षों के लिए समर्पित कर दिया, यहाँ तक कि कई बार कारावास भी भुगता। इसी तरह, पुणे में एस पी कॉलेज में पढ़ते समय भी उन्होंने आंदोलन में शामिल होने के लिए अपनी शिक्षा छोड़ दी। लेकिन जैसा कि उनके पिता ने कहा था 'पहले कर्ज चुकाओ फिर फकीर बनो, उन्होंने फिर से कॉलेज का इंतजार किया। स्वतंत्रता संग्राम की दृष्टि से वर्ष १९३० कई मायनों में महत्वपूर्ण था। दिसंबर १९२९ में लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज्य की मांग को साकार करने के लिए गांधीजी ने १२ मार्च १९३० को दांडी यात्रा शुरू की। जलियांवाला बाग नरसंहार ६ अप्रैल १९३० को हुआ था। इससे पूरे देश का माहौल देशभक्ति और आज़ादी की आकांक्षा से आपूरित था। गुरुजी कुछ समय के लिए अमलनेर के पास पिंपराले में खादी आश्रम में रहे। सुतकताई का अध्ययन करने के बाद, उन्हें अभियान चलाने और स्वयंसेवकों को इकट्ठा करने का काम सौंपा गया। उन्होंने पूर्व खानदेश में चुनाव प्रचार जोरदार शुरू किया। विडम्बना यह है कि शुरू में उनके भाषणों की यह कहकर आलोचना की गई कि 'साने गुरुजी के भाषण बहुत भड़कीले होते हैं। आज हम साने गुरुजी को एक कोमल हृदय व्यक्ति के रूप में जानते हैं। बाद में अनुभव से वे भाषण सौम्य हो गये होंगे। पालगढ़ के पास जाकर उन्होंने आचार्य जावडेकर, भाऊसाहेब रानडे इ. की उपस्थिति में नमक सत्याग्रह में भाग लिया। उनके भाषणों के कारण १७ मार्च १९३० को उनकी गिरफ्तारी हुई और उन्हें पहली बार धुले जेल में कैद किया गया। बाद में १९३० में त्रिचनापल्ली, १९३२ में फिर धुले, १९४३ में यरवडा में कई बार जेल गये। लेकिन राजनीतिक कैदियों के लिए जेल की ये शर्तें युवा कार्यकर्ताओं के निर्माण के लिए हमेशा

मूल्यवान रही हैं; इसी प्रकार साने गुरुजी के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध हुआ। त्रिचनापल्ली की जेल में आचार्य एस. जे. भागवत, धुले में आचार्य विनोबा भावे , यरवडा में आचार्य शं. दा. जावड़ेकर जैसे दिग्गजों के करीबी सहवास का उन्होंने आनंद लिया। चूंकि आचार्य भागवत ने जेल में साने गुरुजी को करीब से देखा, इसलिए बाद के वर्षों में साने गुरुजी की आलोचना की गई लेकिन आचार्य भागवत ने उन्हें अच्छी तरह से समझा और उनके साहित्य के महत्व पर प्रकाश डाला। कुछ हद तक यह कहा जा सकता है कि उस समय साने गुरुजी का सही आकलन आचार्य भागवत ने ही प्रस्तुत किया था।

इसी दौरान विनोबा की संगत से दोनों के बीच स्नेहबंध निर्माण हो गया। दोनों के बीच अध्यात्मप्रेम आत्मीयता का मुख्य सूत्र था। जेल में विनोबा द्वारा दिए गए गीता उपदेश को सुनने के बाद 'गीता प्रवचन, पुस्तक का प्रकाशन हुआ। लेकिन गुरुजी राजनीतिक कार्यों में विनोबा का अनुसरण नहीं कर सके। चूँकि विनोबा के नावरा-नावरी में बने आश्रम में आनंद नहीं आया तो गुरुजी अचानक वहाँ से चले गये। कदाचित विनोबा का आध्यात्मिक कार्यों के प्रति अतिरिक्त झुकाव ही उन्हें विनोबा से दूर ले गया। देश की राजनीतिक स्वतंत्रता और समानता के लिए संघर्ष ये बाते निश्चित रूप से गुरुजी को संकेत दे रहे थे। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि यद्यपि गुरुजी गांधी-विनोबा में विश्वास करते थे, लेकिन उनकी अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य के बारे में उनके मन में संदेह था। 'श्यामची पत्रे' पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि, ''हालाँकि हम हिंसा के भक्त नहीं हैं, हम हिंसा तभी करेंगे जब यह अपरिहार्य हो। आप कहते हैं, अमीरों, ट्रस्टी बनो। कौन अमीर यह सुन रहा है? क्या होगा इसका अगर हम इन अमीरों के खिलाफ अहिंसक सत्याग्रह करेंगे तो हमें गोली मार दी जाएगी। हम ऐसे मरने को तैयार नहीं । **(अपूर्ण)**

धर्म तो एक ही सच्चा

धर्म तो एक ही सचा,, जगत को प्यार देवें हम।
जगत में दीन जन जितने, जगत में पददलित जितने।
उन्हें ऊपर उठायें हम, जगत को प्यार देवें हम ।। धर्म तो.....
सदा जो आर्त व्याकुल हैं, जिन्हें सब ही सताते हैं।
न्हें जाकर हसावें हम, जगत को प्यार देवें हम ।। धर्म तो...
किसी को कष्ट क्यों देवें ? किसी को दु :ख न देवें सभी को बंधु माने हम, जगतको प्यार देवें हम ।। धर्म तो...
प्रभु सन्तान हैं सारे, सभी जन हैं, उसे प्यारे।
भला क्यों नीच माने हम, जगत को प्यार देवें हम ।। धर्म तो.....
धर्म का सार यह ही है, सत्य का सार यह ही है
परार्थ प्राण देवे हम, जगत को प्यार देवें हम ।। धर्म तो...

- साने गुरुजी

एक सुंदर प्रेरक लघुकथा

यूनान में एक संत हुए हैं। डायोजनीज। एक कुत्ते को सागर से निकल कर, रेत में लोटते देखकर, डायोजनीज ने अपना लंगोट और कटोरा गिरा दिया था, कि कुत्ता इनके बिना मस्त रह सकता है तो मैं क्यों नहीं? तब से वह सागर किनारे ही रहने लगे। उधर सिकंदर ने विश्व विजय के लिए निकलने से पहले, उसके दर्शन करने का विचार किया। डायोजनीज रेत में लेटा था। सिकंदर आया और बोला– मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूँ। डायोजनीज ने कहा– दर्शन हो गए हों, तो सामने से हट जाओ। तुम मेरी धूप में बाधा बन रहे हो। सिकंदर– तुमने मुझे पहचाना नहीं? मैं सिकंदर हूँ। डायोजनीज– ओह! तो तुम हो सिकंदर? यहाँ से रोज जो लाव–लश्कर निकलते हैं, वे तुम्हारे हैं? हाँ! सिकंदर मुस्कुराया। डायोजनीज– इतनी तैयारी किसलिए चल रही है? सिकंदर– मैं विश्वविजय के लिए जा रहा हूँ। डायोजनीज– अच्छा? पर किसलिए? सिकंदर– यह मेरी इच्छा है। जब तक मैं पूरा विश्व न जीत लूं मेरे मन को चैन नहीं पड़ता। डायोजनीज– लेकिन तुम विश्व को जीत कर करोगे क्या? सिकंदर– तब करने को कुछ बचेगा ही कहाँ? तब तो मैं आराम करूंगा। डायोजनीज– जो करना हो करो। मेरा कोई आग्रह नहीं है, पर अगर तुम आखिर आराम ही करना चाहते हो, तो उसके लिए पूरी दुनिया का चक्कर लगाने की क्या जरूरत है? देखते हो? कितना सुंदर मौसम है? कितनी प्यारी धूप है? कितनी नर्म रेत है? कितनी मस्त हवा चल रही है? छुट्टी कर सब की, तू भी सबसे छूट जा। ये ताज गिरा दे, कपड़े उतार, और यहीं लेट जा। यहाँ बहुत आराम है। आराम ही आराम है। पर सिकंदर को आराम कहाँ? और आप जानते ही होंगे, वह कभी यूनान न लौट सका, कभी आराम न कर सका। वह रास्ते में ही मर गया। सद्गुरु कहते है कि सिकंदर तो सिकंदर की कहानी नहीं जानता था। पर अब आप तो जानते हैं? 'आप' कब आराम करेंगे? **(संग्रहित)**

सोलापुर आंतर भारती की ओर से गांधी स्मृति दिन–

''महात्मा गांधी के सत्य अहिंसा तत्व सार्वकालीन''

– सुभाष शास्त्री

सोलापुर आंतर भारती शाखा की ओर से गांधी स्मृति दिन संपन्न किया गया। ''सत्य–अहिंसादि तत्वों के आचरण से ही विश्व में शांति स्थापित को सकती है'' । अपने वक्तव्य में शाखाध्यक्ष सुभाष शास्त्री ने कहा । कार्यक्रम का प्रारंभ 'वैष्णव जन तो प्रार्थना से हुआ । कार्यवाह अरूण धुमाळ ने '' रघुपति राघव राजाराम'' प्रस्तुत किया। सदस्य प्रा. नागणसुरे ने म. गांधी के जीवन की प्रेरक घटनाएं बतायी ।

शाखा की ओर से स्टेशन के समीपस्थित गांधी की प्रतिमा को पुष्पहार अर्पणकर अपनी श्रध्दा व्यक्त की । इस अवसर पर पदाधिकारी तथा सदस्यगण उपस्थित थे ।

यह वही गांधी बोल रहा है ...

–दिलीप तायडे

देश मे असहयोग आंदोलन चल रहा था। गांधी असहयोग आंदोलन के प्रचार के लिए देशभर मे दौरा कर रहे थे। उन्होंने सारे पदम पुरस्कार और सम्मानपत्र जो उन्हे दक्षिण अफ्रीका में सेवा कार्य के लिए मिले थे, सरकार को वापस लौटा दिए और यन्ग इन्डिया में तब उन्होंने लिखा था लार्ड रिडिन्ग जान ले, सरकार के खिलाफ यह खुला, लेकिन अहिंसात्मक विद्रोह है.... यह वही गांधी बोल रहा है जिसे ब्रिटिश हुकुमत एक वफादार प्रजाजन मानता था। उनके इस क्रान्तिकारी व्यक्तित्व को देखकर सरकार भी दंग रह गयी थी। वे सारे देश में यह कहते हुये घूम रहे थे अन्ग्रेजो ने देश को नहीं जीता, वह तो हमने उनको सौंप दिया है, वे आज यहां राज कर रहे वह अपने बल पर नहीं, हम ही उन्हे अपने ऊपर राज करने दे रहे हैं। आज कान्ग्रेस में कहां है ऐसे क्रान्तिकारी! महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, धर्म के नाम पर द्वेष, हिंसा, अन्याय, विनाश कारी बुलडोजर संस्कृति और चुनी हुयी सरकारो को अपदस्त करने की अनैतिकता। जो गलत है, बुरा है वह कभी भी सही या उचित नहीं होता। और गलत को गलत कहने की हिम्मत भी हर किसी में नहीं होती। संक्रमणकालीन राजनीति और गलत दिशा में जाने वाला जनमत आत्मविनाश की ओर ही ले जाता है। सत्ता की भूख और अधिकार, प्रभुत्व की भावना राजनैतिक अस्थिरता का कारण बनती है। स्वेच्छाचारी और तानाशाही वृत्ति और विचार से लिये जाने वाले अकल्पनीय और अप्रत्याशित फैसले मॉडल नहीं होते और न मैजिक। उनमें आशंकित अस्थिरता का ही भय निहित होता है। गांधी ने अपने राजनीतिक जीवन में सत्य के अलावा अन्य कोई कूटनीति नहीं जानी। अहिंसा के अलावा उसके पास कोई हथियार नहीं था। कभी उसने आशावादिता नहीं त्यागी। ७९ वर्ष की आयु में भी वह गतिमान था और प्रत्यक्ष घोर विपत्ति के काल मे भी उसके भीतर आशा की प्रखर ज्योति जलती रही। निराशा से परिव्याप्त अंधकार मे भी गांधी आशा है और इस देश के लिए आवश्यक भी

(सम्पादक–गांधी स्मरण)

अनुभव के बोल

❋ सबकुछ कुछ नहीं से शुरू हुआ था। ❋ काम इतनी शांति से करो कि सफलता शोर मचा दे।
❋ भीड़ हौसला तो देती हैं लेकिन पहचान छिन लेती हैं।
❋ जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी।
❋ इंतजार करना बंद करो, क्योंकि सही समय कभी नही आता।
❋ सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से आप नदी नहीं पार कर सकते।

आंतरभारती परिवार की ओर से मधु तलवलकरजी को श्रद्धांजलि

आंतर भारती परिवार के वरिष्ठ सदस्य एवं अखिल भारतीय राष्ट्र सेवा दल के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री. मधु तलवलकर का मंगलवार, ३० जनवरी २०२४ को रात में हृदय गति रुकने से निधन हो गया। उनकी उम्र ८० साल से ज्यादा थी।

मधु तलवलकर ने पिछले ३५ वर्षों तक राष्ट्रसेवा दल और अन्य समाजवादी संगठनों में काम किया। वह हिसाब-किताब के मामले में बहुत सख्त थे। किसी भी मीटिंग से पहले वह उस मीटिंग में उठाए जाने वाले मुद्दों के बारे में नोट्स बनाते थे। उनके काम में नियोजन बनाना और क्रियान्वयन करना शामिल था। वे जीवनभर समाजवादी विचारधारा के प्रति निष्ठावान रहे। वे महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे।

उनका महाराष्ट्र और देश के सभी महान नेताओं से घनिष्ठ परिचय था और उन्हें उनकी संगति भी मिली थी। उनमें से कई लोगों के साथ उन्होंने काम भी किया था।

कई वर्षों तक उन्होंने राष्ट्र सेवा दल और विदेशों में समाजवादी संगठनों के बीच आदान-प्रदान की सुविधा के लिए फाल्कन मूवमेंट के माध्यम से यूथ एक्स्चेंज कार्यक्रम संपन्न किया।। उसके तहत महाराष्ट्र के कई युवा एक से दो सप्ताह तक विदेश में रुककर आये। युवाओं को यह मौका दिलाने में मधु तलवलकर का अहम योगदान रहा।

राष्ट्र सेवा दल ने अमृत महोत्सव के वर्ष के दौरान लगभग तीन करोड़ रुपये तक का धन एकत्र किया। तलवलकर ने उस फंड को इकट्ठा करने और उसका सब हिसाब रखने में महत्वपूर्ण अमूल्य योगदान दिया था।

उन्होंने राष्ट्र सेवा दल की स्वर्ण जयंती, हीरक जयंती और अमृत जयंती तीनों अवसरों पर कोषाध्यक्ष के रूप में असाधारण कार्य किया।

वह पुणे आंतरभारती शाखा के पूर्व अध्यक्ष थे और उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संगठन लायंस क्लब के साथ भी काम किया था। सेवानिवृत्ति के बाद, उन्होंने ओडिशा राज्य के दूरदराज के इलाकों में वंचित बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए काम करते रहे। उनका रहन-सहन सादा था। वह अपनी आय का बड़ा हिस्सा सामाजिक कार्यों में खर्च करते थे और उदारतापूर्वक सामाजिक कार्यकर्ताओं की मदद करते थे।

जीवन के अंतिम क्षणों में भी अकेले रहते हुए भी उनका वाचन बहुत बड़ा था।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए। आंतरभारती परिवार की ओर से एक ऑनलाइन शोक सभा आयोजित की गई।देश के विभिन्न राज्यों के कई गणमान्य व्यक्तियों द्वारा श्रद्धांजलि

भाषण दिए गए।

अंतरभारती ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष पांडुरंग नाडकर्णी ने कहा कि एक जिंदादिल साथी का निधन दुखद है। राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अमर हबीब ने अंतरभारती के हर कार्य के प्रति समर्पित रहने वाले व्यक्ति के निधन पर दुख व्यक्त किया.

आंतरभारती ट्रस्ट के राष्ट्रीय सचिव डॉ. डी. एस. कोरे ने कहा कि आंतरभारती की पुणे शाखा की स्थापना करते समय हमने उन्हें यह जिम्मेदारी दी थी। वे बहुत कम बोलते थे और सैद्धांतिक स्तर पर स्पष्टवादी थे। वह प्रत्येक मामले को क्रियान्वित करने के लिए विभिन्न विकल्प सुझाते थे। उन्होंने समाजवादी साथी के साथ भी काम किया। लेकिन इनदिनों वे राष्ट्र सेवा दल के बारे में बहुत कम बात करते।

उनकी रुचि सेवादल, साधना साप्ताहिक और आंतरभारती में थी। सक्रिय कार्य करने वाले ऐसे साथी का निधन हो गया। बहुत दुख की बात है।

ऑनलाईन शोकसभा में प्राचार्य राजा महाजन (अचलपुर, अमरावती) आरिफ बेग (नासिक), राम माने (पुणे) श्री. हर्षदभाई रावल (गुजरात) संविदा पंड्या (बड़ौदा), श्यामला देसाई (पुणे), मधुश्री आर्य (औराद, लातूर), अनिता कांबले (अंबाजोगई) प्रिंसिपल उमाकांत चन्नशेट्टी (सोलापुर) राजेंद्र बहालकर (पुणे), मयूर बागुल (पुणे), रोहित कांबले (पुणे), हितेंद्र चौधरी (नेपाल से) नाभराज जोशी, प्रोफेसर शांताराम चव्हाण, डॉ. राजपूत (अमरावती), आदि। आंतरभारती परिवार एवं विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं परिचित मित्रों सदस्यों ने उनकी स्मृतियों को स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

मूर्तिजापुर आंतर भारती की ओर से गांधी स्मृतिदिन तथा महिला प्रबोधन कार्यक्रम

मूर्तिजापुर –स्थित श्री गाडगे महाराज महाविद्यालय में आंतर भारती की ओर से गांधी स्मृति तथा महिला प्रबोधन कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रभारी प्राचार्य पी.आर. वानखाडे अध्यक्ष थे। प्रमुख अतिथि डॉ. समृध्दि तिडके ने अपने व्याख्यान में गांधी की झूठी बदनामी के आरोपों का खंडन करते हुए अत्यंत योग्य मुद्दों के साथ उसका विवेचन किया। शाखाध्यक्ष सुधाकर गौरखेडे, उपाध्यक्ष प्रा. अविनाश बेलाडकर कार्यवाह प्रमोद राजंदेकर, कोषाध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण गांवडे, सदस्य प्रा. मीना गांवडे, अविनाश बांबल, शाम कोल्हाळे, प्रा. वाकडे तथा महाविद्यालयीन बहुसंख्य, प्राध्यापक छात्र–छात्राएं इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रमोद राजंदेकर डॉ. रामकृष्ण गांवडे, प्रा. मीना गांवडे प्रा. वाकडे, प्रा. मनीषा यादव इ. ने समयोचित वक्तव्य किया। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रेरक रहा। अंत में उदगीर के शिवाजीराव आपटे से प्राप्त स्व. सदाविजय आर्य स्मृति विशेषांक का सदस्यों में वितरण हुआ। सूत्रसंचलन डॉ. मनीषा यादव ने , प्रास्ताविक प्रा. सुधाकर गौरखेडे ने तथा धन्यवाद भाषण शाम कोल्हाळे ने किया।

आंबाजोगाई में गांधी स्मृति एवं महिला प्रबोधन
''म.गांधी के स्पप्न की स्त्री स्वतंत्र एवं भयमुक्त '' - डॉ. शैलजा बरुरे

आंबाजोगाई : आंतर भारती, आंबाजोगाई की ओर से महात्मा गांधी स्मरणदिन के निमित्त महिला प्रबोधन कार्यक्रम संपन्न हुआ । इस भव्य सभा में डॉ. शैला बरूर ने अपने वक्तव्य में कहा , स्त्री को षुरुषों की तुलना मे.असमर्थ समझकर उसे बंधन में रखा जाता है। स्त्री अभी भी भयमुक्त नहीं ।दक्षिण अफ्रिका के आंदोलन में कस्तुरबा ने काले कानून के विरुध्द लडाई की और यश प्राप्त किया । उन्हे शिक्षित कर जागृत सामर्थ्यवान बनाने की बात कही। धर्मनिरपेक्षता के लिए लडनेवाले गांधी की हत्या की गयी । गांधी ने स्त्रियों के साथ हमेशा समानता का व्यवहार किया था । गांधी कभी मरेंगे नहीं, गांधी विचार तथा महिला सक्षमीकरण के लिए खास प्रयत्न संगठनों से हो ।''

अनिता कांबळे ने प्रास्ताविक तथा अॅड. कल्याणी विर्धेने आभार व्यक्त किया । इस अवसर पर भगवंत पाळवंदे, स्वरूपा कुलकर्णी, संजीवनी देशमुख, अॅड. शोभा लोमटे, काटेताई, सुनिता कात्रेला, अॅड.संतोष पवार आदिने अपने विचार रखे ।

इस कार्यक्रम में आशाताई हबीब, कमलताई बरूळे, सीमाताई शेंगुळे, रंजना कराड, सुरेख शिरसट, तिलोत्तम पतकराव, दीपाताई स्वामी, जोगदंड ताई, महावीर भगरे, दत्ता वालेकर, शरद लंगे आदि उपस्थित थे।

संभाजी नगर में गांधी स्मृति दिन एवं महिला प्रबोधन-
'' गांधी कभी भी मिटाये नहीं जा सकते ! - अमर हबीब

संभाजी नगर – आंतर भारती संभाजी नगर की ओर से आयोजित म. गांधी स्मृति दिन एवं महिला प्रबोधन कार्यक्र में आंतर भारती के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष अमर हबीब ने कहा '' गांधीस्मृति को हर तरह से मिटाने कार्य, जिसे आज राजाश्रय भी मिला है, कभी सभी सफल नहीं होगा । 'एकमय लोक' की उदात्त भावना गांधी ने ही बिंबित किया । डॉ. लक्ष्मी बोरकर ने कहा '' गांधी कालातीत थे , बालविवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह जैसे अनिष्ट रूढ़ियों के विरोधी थे ।

प्रा. शोभा शिराढोणकर ने अपने मनोगत में कथा माध्यम से सत्य अहिंसा का महत्व अधोरेखित किया । छात्रा शीतल राजपूत ने अपने विचार व्यक्त किये, आंतर भारती की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में इसने प्रथम पारितोषिक प्राप्त किया था ।

प्रास्ताविक डॉ. अलका वालचाले ने, अतिथि परिचय मंगला पैठणे ने, सूत्रसंचालन लता मुसळे ने तथा धन्यवाद भाषण वैशाली आठवले ने किया । इस कार्यक्रम में शाखाध्यक्ष एड. शशिकांत शिंदे, प्रा. ललिता गादगे, मंगल खिंवसरा, अण्णा खंदारे, सुलभा खंदारे, डॉ. शकुतला लोमटे, ज्ञानप्रकाश मोदाणी, प्रा. श्रीराम जाधव प्रा. पैठणे, महाविद्याल्यीन छात्रा, महिला शाखा के सभी पदाधिकारी सदस्य बडी संख्या में उपस्थित थे ।

पुणे आंतर भारती आयोजित गांधी स्मृति और महिला प्रबोधन

पुणे आंतर भारती शाखा की ओर से गांधी स्मरणदिन निमित्त से महिला प्रबोधन कार्यक्रम कर बापू को आदरांजली अर्पित की गयी । समारोह की अध्यक्ष साहित्यकार ज्योत्स्ना चांदगुडे थी । प्रमुख अतिथि वाडिया महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. वृषाली रणधीर उपस्थित भी । इस अवसर पर आंतर भारती के राष्ट्रीय कार्यवाह ॲड. डी.एस कोरे , निवृत्त न्यायाधीश पारेख ने मार्गदर्शन किया। राम माने, मयूर बागुल, प्रभा सोनवणे, वर्षा गुप्ते, मृणालिनी कानिटकर जोशी, सविता कुरुंदवाडे, शकुंतला कोरे, शैलजा मोळक, श्रध्दा देशपांडे, हेमलता जाधव आदि अपने प्रसंगोचित विचार रखे । कवियत्रियों ने आशयपूर्ण कविताएं प्रस्तुत की । प्रास्ताविक शाखाध्यक्ष अंजलि कुलकर्णीने, सूत्र संचालन स्वाती दाढे ने संपन्न किया ।

म. गांधी के विचार आज की मांग- डॉ. शारदा कदम

वसमत : वसमत आंतर भारती की ओर से संपन्न म. गांधी पुण्यतिथि तथा महिला प्रबोधन कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता डॉ. शारदा कदम ने कहा, ''गांधी के विचारों की प्रांसगिता अहिंसा, प्रेम, सत्य का महत्व इत्यादि को अगली पीढितक सक्षमता से ले जाना हमारा कर्तव्य है ।'' आंबेडकर प्रतिमा के पास आयोजित कार्यक्रम के प्रारंभ में गांधी प्रतिमा पर पुष्पहार अर्पित किया गया । खरा तो एकचि धर्म' पल्लवी द्वारा गाये गये इस गीत से प्रारंभित इस कार्यक्रम की प्रस्तावना करते हुए आंतर भारती की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा संगीता देशमुख ने गांधी और स्त्री विचार पर अपना वक्तव्य दिया । ॲड. रामचंद्र बागल ने गांधी को सदा अमर्त्य कहा । शाखाध्यक्ष सुभाष लालपोतु ने कहा '' गांधी विचार अनवरत -अखंडरूप से रहेगा।संपूर्ण विश्व उनको मानता है, युवकों को गांधी विचार अपनाना चाहिये ।

सूत्रसंचालन वैशाली काळे तथा धन्यवादभाषण मंगल खानापुरे ने किया। बाबासाहेब आंबेडकर-प्रतिमा को पुष्पहार समर्पित कर वहां से शिवाजी महाराज प्रतिमा तक शांति मोर्चा निकाला गया । इस समारोह में बहिर्जी विद्यालय, केंब्रिज विद्यालय की छात्रा तथा हुतात्मा बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय की राष्ट्रीय महाविद्यालय की छात्राएं , शामिल थीं। उसीप्रकार योगा महिला ग्रूप, पूजा बचत गुट, जिजाऊ ब्रिगेड, शि.शि. संवाद, आंतर भारती शाखा के सदस्य तथा नगर के अनंत साधू, महादेव कापुसकरी, श्यामभाऊ दिगुळकर, बाळासाहेब महागांवकर अशोक सातपुते, भास्करराव शास्त्री, रेणुकाताई माचेवार, शंकुतलाताई सातलवार, डॉक्टर्स इ. महिला पुरुष २५० से भी अधिक संख्या में थे ।

एकता के लिए अथक प्रयासरत

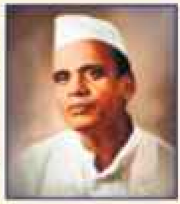

साने गुरुजी

साने गुरुजी ने। आंतर-भारती आंदोलन शुरू किया। इसके पीछे उनका विचार था कि भारत विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, भाषाओं, जातियों वाला देश है। हालाँकि, भारतीय आबादी के भीतर यह विविधता कभी-कभी एकता की भावना के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। हमारे देश की एकता बनाए रखने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक साथ आना चाहिए, एक-दूसरे की भाषाएँ सीखनी चाहिए, एक-दूसरे के रीति-रिवाजों को समझना चाहिए, एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए। इससे उनके बीच सांस्कृतिक संबंध मजबूत होंगे और राष्ट्रीय एकता भी मजबूत होगी। गुरुजी का आंतर-भारती का विचार भारत की एकता के प्रति उनकी निष्ठा का परिचायक है।

गांधी स्मृति दिन के अवसर पर हैद्राबाद में मानवी विवाहितों का सन्मान संपन्न हुआ।

अमलनेर, साहित्य सम्मेलन में अमर हबीब वक्तव्य देते हुए

सोलापुर में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम

आंबाजोगाई में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन

पुणे में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन

मूर्तिजापुर में म.गांधी स्मृतिदिन कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन